



संपादक की कलम से.....

गीता शर्मा

साहित्य के साथ जीता गाँव

भारतीय साहित्य की जड़ें गाँव की मिट्टी में गहराई तक समाई हुई हैं। गाँव केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि भारतीय जीवन, संस्कृति और संवेदना का मूल आधार रहा है। हमारे साहित्य ने सदैव गाँव की घड़कनों को सुना है, उसकी पीड़ा, संघर्ष, सरलता और मानवीय रिश्तों को शब्दों में ढाला है। इसलिए जब हम साहित्य के परिदृश्य की चर्चा करते हैं, तो गाँव उसका अभिन्न और जीवंत केंद्र दिखाई देता है।

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक साहित्य तक गाँव की उपस्थिति निरंतर बनी रही है। लोकगीतों, लोककथाओं और भक्ति साहित्य में ग्रामीण जीवन की सहजता और प्रकृति से उसका गहरा संबंध स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। खेत-खलिहान, नदी-तालाब, ऋतु-चक्र और सामूहिक जीवन की परंपराएँ साहित्य को जीवन्त बनाती रही हैं। इन रचनाओं में गाँव केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि जीवन की सच्चाई और मानवीय अनुभवों का केंद्र होता है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में भी अनेक रचनाकारों ने गाँव के जीवन को अपने साहित्य का आधार बनाया है। किसानों की पीड़ा, सामाजिक विषमताएँ, आर्थिक संघर्ष और ग्रामीण समाज की जटिलताएँ साहित्य के माध्यम से सामने आई हैं। इन रचनाओं ने न केवल गाँव की वास्तविक स्थिति को उजागर किया, बल्कि समाज को उसके प्रति संवेदनशील बनाने का कार्य भी किया।

हालाँकि समय के साथ गाँव भी परिवर्तन की प्रक्रिया

से गुजर रहा है। तकनीकी विकास, शिक्षा और शहरीकरण के प्रभाव ने ग्रामीण जीवन को नए आयाम दिए हैं। एक ओर जहाँ सुविधाओं का विस्तार हुआ है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक जीवन-शैली और सामुदायिक संबंधों में भी बदलाव दिखाई देता है। यह परिवर्तन साहित्य के लिए भी एक नया विषय और नई संवेदना लेकर आया है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि साहित्य गाँव को केवल स्मृति या अतीत की वस्तु के रूप में न देखे, बल्कि उसे वर्तमान और भविष्य की दृष्टि से भी समझे। गाँव के बदलते सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्वरूप को साहित्य में स्थान मिलना चाहिए। जब साहित्य गाँव की वास्तविकता को ईमानदारी से अभिव्यक्त करता है, तभी वह समाज के व्यापक चित्र को प्रस्तुत कर पाता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि गाँव भारतीय साहित्य की आत्मा है। उसकी मिट्टी में जीवन की सादगी, संघर्ष और मानवीय संवेदनाओं का अमूल्य खजाना छिपा हुआ है। साहित्य का दायित्व है कि वह इस धरोहर को सहेजे और बदलते समय के साथ उसकी नई व्याख्या भी प्रस्तुत करे, ताकि गाँव की आवाज़ समाज और साहित्य दोनों में जीवित बनी रहे।